रविवार, दिनाँक 27-10-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

मेरे साजन जी तूं धन है, मेरे शहनशाह तूं धन है

तेरी लीला अजब निराली ए, पई तकदी दुनियाँ सारी ए

मेरे साजन जी तूं धन है, मेरे शहनशाह तूं धन है

लोहे नूं वी पारस करदा नजर तेरी दा गहणा

मेहर दी नजर करे मेरा साजन होर असां की लैणा

तूंने तारी सृष्टि सारी है हुण आ गई साडी वारी है

मेरे साजन जी तूं धन है, मेरे शहनशाह तूं धन है

तूं धन है धन है धन है तूं धन है धन है धन है

मेरे साजन जी तूं धन है, मेरे शहनशाह तूं धन है

यह तो सत्य है कि सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की महिमा कहने-सुनने से बाहर है व अपने आप में निराली है। इस सन्दर्भ में हम आज आप सबको एक शुभ सूचना देना चाहते हैं कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित वचनों के अनुसार अब जगह-जगह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर समभाव-समदृष्टि के स्कुल खुलने जा रहे हैं। सबसे पहला स्कूल जालन्धर शहर में खुलने वाला है और फिर उसी श्रृँखला में पन्चकूला व अम्बाला में खुलने जा रहा है। तदुपरान्त जैसे-जैसे अन्य शहरों वाले सजन यथार्थ रूप से सही ढँग से स्कूल चलाने के प्रति योग्यता दिखायेंगे तो वैसे-वैसे उन शहरों में भी यह स्कूल खोल दिए जाएँगे। जानो ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि अब समय आ गया है, हर सजन को परमार्थ के रास्ते पर स्थिरता से आगे बढ़ाते हुए परमार्थवाद क्या है, यह समझाने का। सजनों इसे विश्व-स्तर पर भाव-स्वभावों का सकारात्मक परिवर्तन लाकर पुनः शान्तमय व्यवस्था स्थापित करने की एक क्रान्ति समझो। इसलिये अपने उत्तरदायित्व यानि जिम्मेदारी को समझते हुए एक क्रान्तिकारी की भान्ति, इस बात को भूलकर कि हमारी

शरीरी अवस्था अब कैसी है, आत्मीयता के गुण व शक्ति को पहचानो और इस हेतु सर्वप्रथम आत्मिकज्ञान प्राप्त करो। इस प्रकार आत्मिकज्ञान प्राप्तकर ओजस्वी व तेजस्वी बनकर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को संग रखते हुए यानि उनके विचारों को धारण करते हुए आत्म-विश्वास के साथ निरन्तर आगे बढ़ते जाओ। हर सजन ने इस कल्याणकारी क्रिया में अन्यों को भी सम्मिलित करने के प्रति रुचि लेनी है। याद रखो अब समय परिवर्तित हो गया है अतः समय की चाल को समझो और अपने व समाज के हित के लिये जागृति में आ जाओ।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों आज की बात को अनसुना मत करना अपितु स्मृति में रखते हुए इस पर क्रिया करना आरम्भ कर देना। आशय यह है कि इस क्रान्ति को शीघ्रातिशीघ्र सफलता प्रदान करने हेतु अपने साथ अधिक से अधिक सजनों को संलग्न करने में किसी विध् भी कमजोरी मत दिखाना। याद रखो जो भी इसमें कमजोरी दिखायेगा, वह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों के प्रतिकूल जीवन यापन करता हुआ अन्त दुःखद परिणाम को पायेगा। आप ही बताओ, फिर उसकी क्या गति होगी - सद्गति या दुर्गति? - दुर्गति। जानो आज की बात को एक कान से सुनकर दूसरे कान से जो निकालेगा वह अपना ही वैरी कहलायेगा। अतैव सजनों इस बात को हृदय में ठहराकर अविलम्ब क्रिया आरम्भ कर दो। यह क्रिया परिवारजनों से आरम्भ कर समाज को साथ लेकर आगे प्रशस्त होने की है। सजनों जानो कि इस क्रिया में जो रुचिपूर्वक सम्मिलित होगा, वह अपना जीवन सफल बनाने में सफल होगा ही होगा। इसके विपरीत जो अपने उत्तरदायित्व को न समझते हुए लापरवाही दिखायेगा वह जन्म-मरण के चक्र-व्यूह में फँस जायेगा। सो आप सबसे अनुरोध है कि अपने हित हेतु अपने सजन बनो और सजनता के प्रतीक बन इस शुभ कार्य में अपना तन-मन-धन से योगदान देने से कदापि मत सकुचाओ। इस सन्दर्भ में यकीन मानो कि अगर आपने सत्यनिष्ठापूर्वक आगे बढ़ना शुरु किया तो समझ लेना कि परमात्मा आपके अंग-संग हैं और आप सफल होकर अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त करने वाले हो। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी मार्ग परमधान पहुँच विश्राम को पाने का नहीं है, यह स्मृति में रखना।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल, महाबीर जी दे नाल ओ रघुनाथ जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, प्रेम वैराग साँवले चरणां दा प्यार।

साँवले चरणां दा प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, साँवले चरणां दी प्रीत रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सम सन्तोष सत शास्त्र दा विचार।

सत शास्त्र दा विचार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, शब्द सुरति दा मिलाप रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सिया राम लक्ष्मण संग होवन बलधार।

संग होवन बलधार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार।

सत्संग नाल प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

मैं दासी तुआडे चरणां तों वारी, संगतां लावन मेरे बलधारी।

अंजनी लाल अग्गूं साडी नमस्कार, अग्गूं साडी नमस्कार ।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

यह सजनों बहिर्मुखता त्याग अन्तर्मुखी हो जाने की शुभ बात है। सजनों आपको भी अपने जीवन काल में ऐसा ही सुनिश्चित करना होगा। ऐसा करने पर ही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के शास्त्र विहित वचनों से आपका प्रेम बढ़ेगा और मजबूत होगा। फिर दुनियाँ के अज्ञान को प्राप्त करने के प्रति इच्छा पैदा ही नहीं होगी। इसका सीधा और स्पष्ट लाभ होगा कि आपको दुर्गुणों से मुक्ति मिलेगी और सद्‌गुणों का विकास होगा। ऐसा होते ही आपका जीवन जो अभी तक निरर्थकता की ओर अग्रसर हो रहा है, वह सार्थकता की ओर बढ़ने लगेगा। जानो सार्थक जीवन ही सम्पन्न जीवन कहलाता है जबकि निरर्थक जीवन आडम्बरयुक्त होता है। आडम्बरयुक्त जीवन में इन्सान के मन में कुछ और होता है और वह बोलता कुछ और है यानि उसके व्यवहार में छल-कपट, धोखा और स्वार्थपरता होती है।

उसके फलस्वरूप वैर-विरोध, द्वि-द्वेष का भाव उत्पन्न हो जाता है और यथार्थ भाव यानि समभाव-समदृष्टि, जो कि सजनभाव है, वह लुप्त हो पकड़ से छूट जाता है। सजनों जिस किसी मानव की पकड़ से यह भाव छूटता है तो मान लो कि उसके साथ निश्चित रूप से अनर्थ होने वाला है क्योंकि वह जीवन का यथार्थ अर्थ विस्मृत कर चुका है। इसका मतलब यह हुआ कि जब कोई ऐसी भूल कर बैठता है तो उसके जीवन में अनर्थ होना निश्चित होता है। इसके विपरीत जो कोई भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों को धारणकर तद्नुकूल अपने मन-वचन-कर्म को ढाल लेता है तो उसको जीवन का अर्थ स्वयंमेव ही समझ आ जाता है। ऐसा होने पर फिर उसे किसी अन्य पर निर्भर नहीं होना पड़ता यानि किसी भी शरीरधारी का अनुसरण नहीं करना पड़ता। स्वतन्त्र भक्ति ही उसकी ताकत होती है। सजनों जहाँ स्वतन्त्र भक्ति होती है वहाँ इन्सान को अपनी यथार्थ शक्ति की पहचान होती है।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि आपको कुदरत ने अब इस योग्य बना दिया है कि आप अपने यथार्थ की पहचान करने में सक्षम हो। अतः सजनों अपने मानसिक क्रिया-कलापों को सही तरीके से जानो और उन्हें परख आत्मसुधार करना सुनिश्चित करो। इस सन्दर्भ में शास्त्र भी बार-बार कह रहा है कि हे कलियुगी मानव! केवल कुदरती विचारों को ही धारण कर और तद्नुसार सत्य का प्रतीक बन जा क्योंकि कुदरती विचार ही सत्य के प्रतीक होते हैं। यदि ज्ञानरूप में सत्य को धारणा चाहते हो तो कुदरती विचारों के अतिरिक्त वह आपको कहीं और से प्राप्त नहीं हो सकता। सजनों आप चाहे कितनी ही किताबें क्यों न पढ़ लो, चाहे जितने ही लैक्चर सुन लो, कहीं से कुछ भी इस विषय में प्राप्त नहीं होने वाला। इस बात की गाँठ यानि पल्ले बान्ध लो। इससे आपको सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने की व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की महत्ता और महत्त्व की समझ आ जानी चाहिये। क्योंकर इतने मूढ़-मति बन गये हो कि बार-बार सुनने के पश्चात भी सद्मार्ग पर आने में कमजोर पड़ रहे हो? आपको ऐसा करने से कौन रोकता है ? - 'काम' रोकता है या जो भी इस दृष्टि से नज़र आता है उसे प्राप्त करने की कामना यानि प्रबल इच्छा रोकती है। सजनों यदि ऐसा ही है तो यह बहिर्मुखी बन जगत का हो जाने की बात है।

सजनों यह सर्वविदित है कि जगत तो जड़ पदार्थ है। जड़ पदार्थ के साथ जुड़ोगे तो जड़मति ही बन जाओगे। यही कारण है कि आप उसी जड़मत्तता से उबरने में अपने आप को असक्षम पा रहे हो। हम पूछत हैं कि आपने जड़ता के साथ क्यों सम्बन्ध स्थापित कर लिया है जबकि आप चेतनता के प्रतीक हो। अतः अपने ख़्याल का रिश्ता, जो चेतन अर्थात

चैतन्य है, उसी के साथ जोड़ो। सजनों द्वारे की यही नीति है कि अपना ख़्याल-ध्यान चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते सब कार्य-व्यवहार करते हुए उस चैतन्य यानि ब्रह्मसत्ता संग जोड़ो। याद रखो आप वास्तव में वही सत्ता हो, आत्मा हो, जड़ शरीर नहीं हो और न ही आप मन हो। आपने अपने शरीर और मन को अपने मस्तिष्क पर हावी क्यों कर रखा है? इसीलिये सत्य न तो बोल-चाल में, न व्यवहार मे, न खान-पीन में और न ही वर्त-वर्ताव में प्रगट हो रहा है। तो क्या यही एक मानव की पहचान है? सत्यवान की तो खुराक ही निराली होती है, उसकी पहचान अलग ही होती है जो कि अब तक प्रत्येक सजन की बन जानी चाहिये थी। अब समभाव-समदृष्टि के स्कूल खुलेंगे। कुछ तो विचार करो, विचार करो, सजनों विचार करो और अपने सजन बनो। खुद पर तरस खाओ। सजनों झूठी शान के पीछे मत दौड़ते रहो अपितु इलाही शान प्राप्त करने के निमित्त झूठी शान को त्यागकर निष्काम सेवा में रत हो जाओ। जानो कि निष्काम सेवारत होना सर्वोत्तम कार्य है और यह सबसे उत्तम गुण है। हम देखते हैं कि थोड़ा सा झटका लगता है तो बड़े-बड़े निष्काम सेवक भी टूट जाते हैं जबकि उनको उस झटके का समाधान देने के लिये भी तत्पर होते हैं पर उसके बावजूद भी जो देखने को मिलता है वह कलियुग के प्रभाववश होता है। सजनों इस कलियुग के प्रभाव को हमने ही ताकतवर बनाया हुआ है। उसी ने हमारे आचार-व्यवहार, मन और विचारों को कलुषित कर दिया है। अतः अपनी दुर्गति के दोषी तो हम स्वयं ही हैं। खुद पर घात लगाने का काम तो सबसे कमजोर व डरपोक इन्सान ही करता है। कहाँ तो सजनों वचनों की पालना करके अपनी यथार्थ शक्ति को पहचानना था, जो कि आपने नहीं किया। अब इसी कार्य के प्रति स्कूलों से क्रिया कर हमें सीधा सम्पर्क स्थापित करना पड़ रहा है। यदि अब भी कुछ शर्म अनुभव कर रहे हो तो जागो और क्रियाशील हो जाओ। आपको यह एक और मौका मिल रहा है। अब इस बात पर विचार कर लेना क्योंकि सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि जीवन का नतीजा आपके अपने हाथ में है यानि जीत या हार।

देखो रघुवर जी दी भक्ति, देखो शेरां वाली दी शक्ति।

सम धारो सन्तोष धारो, धैर्य दा सिंगार रे हां।।

धैर्य दा सिंगार, सत् शास्त्र दा विचार रे हां।

लक्ष्मण जी सेवा दिखावे, रघुनाथ जी दी विछाई हो जावे।।

उत्ते सिया राम जी बाहवे, सोहणा लगे दरबार रे हां।

संग उन्हां दे शक्ति राहवे, सोहणा लगे दरबार रे हां।।

सोहणा लगे दरबार सोहणे दा, सोहणा लगे दरबार रे हां।

भरत जी भक्ति दिखावे, शत्रुघ्न शक्ति नूं पावे।।

शक्ति लवणासुर मारे, रघुवर नाल प्यार रे हां।

रघुवर नाल प्यार सोहणे दा, रघुवर नाल प्यार रे हां।।

शिवजी ध्यान जो लावे, ब्रह्मलोक विचों गंगा आवे।

शिवां जी दे जटा विच समावे, देखो सिंगार रे हां।।

देखो सिंगार सोहणे दा, सोहणा सिंगार रे हां।

शिव जी दी जटा विच समावे, देखो सिंगार रे हां।।

तिन खुराकां पिलावे, नर्म गिज़ा दिखावे।

कई जन्मा दा रोग मिटावे, असुर संहार रे हां।।

असुर संहार सोहणे दा, असुर संहार रे हां।

भक्ति दे हैन ओ राजे, शक्ति ओन्हा नाल साजे।।

चरणां दी भक्ति दे मालिक, हैन बलधार रे हां।

प्यारे बलधार सोहणे दे, प्यारे बलधार रे हां।।

ध्वनिः-

ओ३म् ओ३म् ओ३म् विच जड़या होया हां।

ओ३म् ओ३म् ओ३म् विच खड़ा होया हां।।

इस कीर्तन द्वारा कलियुगी मानवों को सृष्टि के सत्य यानि अपने सत्य से परिचित कराते हुए परमात्मा कह रहे हैं कि 'ओ३म्', जो आद् अक्षर है, उस आद् अक्षर का यथार्थ जानने का क्या कभी आपने प्रयास किया है कि इसमे कौन विद्यमान है? क्या कभी उससे आपका परिचय या साक्षात्कार हुआ है? अब अक्षर रूपी वस्तु आपके पास है पर उसका ज्ञान तो खुद को ही प्राप्त करना होता है ताकि आप उसके सत्य का भान करते हुए अपने यथार्थ को जान-पहचान सको व यथार्थतापूर्ण निष्पाप जीवन जीने के योग्य बन सको। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्व-व्यापक परमात्मा कहते हैं कि हे मानव ! जान कि 'ओ३म्' एक सार्थक शब्द है अतैव जो भी ज्ञान प्राप्त करना है, इसी के ज़रिये ही कर। तब आपका मन-मस्तिष्क सार्थकता का यानि सत्य का प्रतीक बन जायेगा। फिर कहीं से कुछ भी प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहेगी क्योंकि कुदरत ने सम्पूर्ण व्यवस्था कायम कर तुझे मानव रूप में इस संसार में भेजा है। स्पष्ट है कि कुदरत ने तो अति सुन्दर व विचार-संगत हमारी बनत बनाई पर हम मानव उस कुदरत के साथ न जुड़कर कुदरती विचारों को धारण करने में कमजोर पड़ गये। ऐसे में हमे कुदरत की रमज़ कैसे समझ आयेगी? 'ओ३म्' आद् अक्षर से सत्यज्ञान प्राप्तकर हम सार्थकतापूर्ण जीवन जीने में कैसे सक्षम हो सकते हैं? इसी नासमझी के कारण अखण्ड भक्ति के स्थान पर पाखण्ड भक्ति-भावों का आरम्भ हो गया। अन्य शब्दों में आत्म-विस्मृत इन्सानों को उलझाकर अधीन कर अपने पीछे चलाने का व अपना अनुयायी बनाने का सिलसिला त्रेता युग से आरम्भ हो गया और अब तो इसकी इन्तहा ही हो गई है, जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते। अधर्मयुक्त समय आ गया है। हर मानव अधर्मयुक्त रास्ते पर चलने लग पड़ा है और इस रास्ते पर चलते हुए विकार-वृत्तियों में उलझ गया है। एक-दूसरे से छीना-झपटी लगी हुई है। इतनी लड़ाईयाँ, गृहस्थाश्रमों में झगड़े, समाज में झगड़े, देशों के झगड़े, बस हर तरफ झगड़ा ही झगड़ा है। यहाँ तक कि मानव के अन्तर्घट में झगड़े घर कर गये हैं और वही मन को शान्ति में नहीं आने देते यानि हमारी अशान्ति का कारण बन बैठे हैं। अब अशान्त वातावरण में तो सत्य धारण करना भी अत्यन्त कठिन हो जाता है।

सजनों इस सन्दर्भ में जानो कि 'ओ३म्' आद् अक्षर की ध्वनि अनहद नाद के रूप में चौबीस घंटे निरन्तर गुन्जायमान रहती है परन्तु अन्दर शोर होने के कारण उसको सुनना कठिन हो जाता है। यहाँ सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि वस्तु घर में यानि आत्मज्ञान घर में है और हम बाहर ढूँढ रहे हैं। इससे बड़ा नालायकी कर्म क्या होगा? अतः सजनों मानो कि वस्तु घर में है और हम घर से इसे प्राप्त कर सकते हैं। उसे विधिवत् प्राप्त करने की युक्ति

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित है। वह युक्ति भी कोई कठिन नहीं अपितु दो शब्दों में ही है - ख़्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल यानि पूर्ण एकाग्रचित्तता। जानो फुरनों से आज़ाद अफुर अवस्था ही एकाग्रचित्तता कहलाती है। यही संकल्प-रहित मन है। इसी अवस्था में अनहद नाद आपके हृदय में उतर सकता है और आप उसे सुनकर धारण कर सकते हो। आत्मिकज्ञान चौबीस घन्टे हमारे पास है। जीवन में कोई भी समस्या आये तो उसका हल आत्मिकज्ञान ही है। सजनों अपनी समस्याओं के समाधान के लिये आप इधर-उधर दूसरों पर निर्भर रहकर क्यों परेशान होते हो जबकि हर समस्या के समाधान हेतु हमारे पास आत्मिकज्ञान है। क्यों सजनों जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, आप अपना ध्यान उसके साथ नहीं जोड़ते? जानो अनहद नाद के ज़रिये वह ज्ञान प्रसारित होता है और एकाग्रचित्तता से उसे सुना जा सकता है। फिर जैसे ही वह ध्वनि किसी को छूती है तो मन शान्त होकर मानसिक रूप से सम अवस्था में आ सन्तोष को प्राप्त होता है। इसलिये कहा गया है सम धारो, सन्तोष धारो। याद रखो तब मन सन्तोषी हो जाता है और हम हर प्रकार से शक्तिशाली यानि कामनामुक्त हो जाते हैं। जानो कामना इन्सान को कमजोर बनाती है जबकि सन्तोष इन्सान को धीर-वीर व शक्तिशाली बनाता है। इस हेतु केवल अभ्यास की आवश्यकता है अतः अभ्यास करो। जीवन में कुछ भी साधना हो, चाहे संगीत-साधना हो उसके लिये भी निरन्तर अभ्यास करना अति आवश्यक होता है, तभी वह साधा जा सकता है। इसलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी लिखा हुआ हैः-

साधना करो ते लावो ध्यान, रस्ता पकड़ो निष्काम।

सजनों निष्कामी हो तो समझ लो कि परोपकारी हो और परोपकारी हुए तो ब्रह्मज्ञानी हो सकते हो। ब्रह्मज्ञानी तो इस सत्य से भिज्ञ रहता कि 'मैं ब्रह्म हूँ'। जब मैं जान गया कि मैं ही ब्रह्म हूँ तो ब्रह्म को कहीं और खोजने की आवश्यकता ही क्या है? अब मुझे ब्रह्ममय होकर ही इस जगत में विचरना है और जगत का कल्याण करना है। जगत का कल्याण करते हुए जगत से आज़ाद रहने के लिये अन्य कोई मार्ग नहीं है, केवल अपनी मूल अवस्था में बने रहना होता है। सर्वप्रथम यह मानना होता है कि मैं मन या शरीर नहीं हूँ अपितु मै आत्मा हूँ और आत्मा में कौन है? - परमात्मा। शास्त्र तो कह ही रहा है कि जब ख़्याल आत्म-स्वरूप में ध्यान स्थित हो जाये तो परमात्मा का अनुभव हो जायेगा। तब आप अपने परम तत्त्व के ज्ञान को जान जाओगे। इसके बाद कुछ भी जानने की ज़रूरत नहीं रहेगी, यही सर्वोत्तम भक्ति-भाव है। सजनों जो आजकल पाखण्ड भक्ति-भाव चले हुए हैं वह अपना रूप बदलते रहते हैं और हमारे मन-मस्तिष्क को उलझाये रखते हैं। अतः सजनों

खबरदार रहो, सतर्क रहो, सावधान रहो। अब किसी के बहकावे में आकर इन पाखण्ड भक्ति भावों में मत उलझना अन्यथा दुर्गति को प्राप्त होवोगे। याद रखो जो अपना प्रभुत्व अन्यों पर जमाना चाहता है, वह ही पाखण्ड भक्ति भाव को महत्ता देता है। तभी तो आजकल असत्य-अधर्म का राज्य स्थापित है और विश्व स्तर पर इसी का साम्राज्य चल रहा है ताकि हर इन्सान आत्म-विस्मृति में बना रहे और उसकी अक्ल टिकाणे ही न रहे। मानव जाति को मूर्ख बनाकर उनका शोषण कर अपना मकसद हल करना उनका एकमात्र उद्देश्य है। सो सावधान हो जाओ और अन्यों को भी सावधान करो। इसी के निमित्त यहाँ पर कई प्रकार की विभिन्न क्रियाओं का आरम्भ हो रहा है। उसके लिये बाल-अवस्था से ही उनको स्वतन्त्र बुद्धि बनाने हेतु मानसिक रूप से प्रयास का सिलसिला आरम्भ हुआ है। अतः सभी सहयोग देना।

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

ओ मेरे दाता, ओ मेरे दाता, दाता हिन हनुमान बलवान, अमर है जैंदा नाम।

उच्ची है जे ओन्हां दी पदवी, उच्ची है जे ओ शान, अमर है जैंदा नाम।।

ओ मैं पहले सजया सजनों, ओ मैनुं कौन सजावे सजनों।

ओ मैनुं हार सिंगार सजनों, ओ मैनुं कौन पवावे सजनों ओ कौन पवावे मैनुं।।

ओ मैं सब नूं देवां सजनों, सब नूं दे रहा हूं सजनों।

ओ हुन कौन है सजन सजनों, जेहड़ा भोग लगावे मैनुं, जेहड़ा भोग लगावे मैनुं।।

ओ मैं हर अन्दर वस्सां सजनों, ओ मैं हर संग राहवां सजनों।

ओ हुन कौन है सजन जेहड़ा, बाहर जंगल ढूंढन जावे मैनुं, बाहर जंगल ढूंढन जावे मैनुं।।

सच्चाई धर्म धारण कर लौ सजनों, फिर चरणां नूं फड़ लौ सजनों।

तुसां इन्हां रीतियां ते चलके सजनों, ओ रिझा लौ मैनुं सजनो, ओ रिझा लौ मैनुं।।

मन मन्दिर प्रकाश है जेहड़ा, सूरज प्रकाश निर्वाण है मेरा।

चांद प्रकाश निर्वाण है मेरा, फिर ओ केहड़ा है सूरज, सजनों।

फिर ओ केहड़ा है चांद सजनों, जेहड़ा रौशनी दिखावे मैनुं जेहड़ा रौशनी दिखावे मैनुं।।

शब्दः-

शक्ति लक्ष्मी संग दरबार ही पहुंचदियां।

साजन जी श्री राम चरणों में करन नमस्कार।

शक्ति हैरान होई, लक्ष्मी वी परेशान होई, देख साजन जी दी चाल।।

भक्तां ते जब भीड़ आई दुःख निवारण करदा आया, इक तूं ही तूं ही।

पीड़ा साडी हरदा आया, दुःख निवारण करदा आया, इक तूं ही तूं ही।।

ए उपदेश सानुं करदा आया इक, तूं ही तूं ही।

गरीबी अमीरी दा सवाल नहीं सजनों, इहो फूक भरदा आया, इक तूं ही तूं ही।।

ध्वनिः-

तूं ही तूं ही ओ तूं ही तूं ही।

संकट साडे हरदा आया।

तूं ही तूं ही ओ तूं ही तूं ही।।

यह सुनने के बाद अब सच-सच बताना कि जीवन की हर पीड़ा से मुक्ति पा वास्तविक आनन्द का कौन अनुभव करना चाहता है?

'सभी ने हाथ ऊपर उठाये'।

ठीक है, अब इस इच्छापूर्ति हेतु आपको क्या करना है? - इस हेतु शास्त्र अनुसार :-

नश्वरता संग नाता तोड़ो, अमरता संग नाता जोड़ो

अब जो जीवन के आखिरी पड़ाव पर हैं, क्या उनको समझ आ गई है? इतना अमोलक जीवन निरर्थक व्यतीत हो गया, वृद्धावस्था आ गई, अब तो सारे होश में आ जाओ और नश्वरता संग नाता तोड़, अमरता संग नाता जोड़ लो। अमर कौन है?

'आत्मा'

हाँ, ओ३म् अमर है आत्मा'। ख़्याल का नाता आत्म-स्वरूप में ध्यान-स्थित कर लो। बस इतन सा ही तो पुरुषार्थ करना है। दीवाली आने वाली है। इस दीवाली पर आप सभी ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में सफल हों। इन्हीं शुभकामनाओं सहित जय सीताराम जी।